बाइबल टीचर

वर्ष 21 फरवरी 2024 अंक 3

सम्पादकीय

झूठे प्रेरित और झूठे पास्टर

प्रेरित पौलुस ने पहिले ही पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यह बात लिख दी थी जो आज हम देख रहे हैं। उसने कहा था कि, ''क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित और छल से काम करनेवाले और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं। और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। सो यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं, परन्तु उनका अंत उनके कामों के अनुसार होगा। (2 कुरि. 11:13-15)।

आज जब मैं टीवी पर लोगों को देखता हूँ तब मुझे मसीहीयत के नाम पर जो खिलवाड़ हो रहा है उसे देखकर बड़ा ही दु:ख होता है। अभी कुछ वर्षों में ऐसे लड़के अपने आप को प्रेरित और प्रोफैट बनाकर आ गये है जिन्होंने मसीह के नाम को खुल्लमखुला एक तमाशा बना दिया है। प्यारे दोस्तों मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि जिन प्रेरितों, पास्टरों और भीड़ जमा करनेवालों को आप देख रहे हैं, ऐसी मसीहीयत के बारे में हम बाइबल में कहीं नहीं पढ़ते। जिस मसीहीयत को प्रभु यीशु ने स्थापित किया था वो बहुत ही साधारण तथा सुन्दर थी। प्रभु यीशु मसीह जब इधर-उधर जाता था तो एक बहुत बड़ी भीड़ उस स्थान पर जमा हो जाती थी और लोग बड़े चाव से भक्ति के साथ उसके प्रवचनों को सुनते थे। वहाँ पीछे पीछे लोग और चेले आवाज़ नहीं लगाते थे, ''कि प्रेज़ दा लार्ड', ''जय यीशु'', हल्लिलूयाह: यह सब लोगों ने एक तमाशा सा बना दिया है। आज यीशु मसीह के नाम से लोगों को भरमाया जा रहा है, चंगाई के नाम पर धोखा दिया जा रहा है। लोग अंधभक्तों की तरह इन लोगों के पीछे भागते हैं, उन्हें अपना गुरू और लीडर मानते हैं। पौलुस ने पहिले ही लिख दिया था कि ऐसे झूठे प्रेरित और पास्टर आयेंगे। आज के युग में यह तेज़ी से आ रहे हैं। यीशु ने और उसके चेलों ने पहले ही लोगों को बोल दिया था कि झूठे प्रचारकों से सावधान रहों। पौलुस ने जो बात 2 कुरि. 11:13-14 में बोली थी यदि मसीही समाज बहुत पहिले इस बात पर ध्यान देता तो आज यह सब देखने को न

मिलता। पौलुस की इस आयत में यदि एक बात पर आप ध्यान दें तो आपको यह पता चलेगा कि शैतान आप भी यानि खुद ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। इसी शैतान ने अपने कुछ लोगों को अपने लिये तैयार कर लिया है ताकि अपनी झूठी बातों और कार्यों से लोगों को भरमाता रहे। इसलिये पौलुस ने लोगों से कहा था, ''कि मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे हो। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार हैं ही नहीं, पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते हैं, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते है। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया हैं, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो स्त्रापित हो। (गलातियों 1:6-7)।

आज हम सबके लिये यीशु का केवल एक सुसमाचार है और वह यह है कि यीशु मेरे और आपके पापों के लिये क्रूस पर मारा गया था यानि बलिदान हुआ, कब्र में गाड़ा गया, और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा, और जब हम इस सुसमाचार को मानकर जल में बपतिस्मा लेते हैं तब हम यीशु के अनुयायी या एक मसीही बन जाते हैं। (1 कुरि. 15:1-4, रोमियों 6:3-4, मरकुस 16:16) यीशु हमें अपनी कलीसिया या मण्डली में मिला देता है। (प्रेरितों 2:41, 47)।

मित्रों, यीशु की शिक्षायें बड़ी ही साधारण है तथा उसके प्रचारक भी बड़े साधारण हैं। पतरस, यूहन्ना, पौलुस बड़ें ही सीधे-सादे लोग थे। कभी भी बड़ी-बड़ी सभाएं करके, लोगों के सिर पर हाथ रखकर धक्का नहीं देते थे। लोग कभी भी उनके पीछे चलकर उनको पास्टर सहाब या अपोस्टल साहब नहीं कहते थे, और न ही पौलुस को पापा जी कहते थे। क्या आप कभी सोच सकते हैं कि एक बहुत बड़ी मीटिंग हो रही है और वहाँ बैंड बाज़ा, ढोलक बज रहे हैं, शोरगुल हो रहा है, और पौलुस लोगों के सिर पर हाथ रख कर कह रहा है, ''फायर'' प्रेज़ दा लोर्ड''। बाइबल में हम कहीं भी ऐसी मीटिंग के बारे में नहीं पढ़ते। कुछ लोग उस स्थान पर गिरते हैं, और लोटते हैं, आवाज़ें निकालते हैं, और इस सबसे मसीही नाम की निंदा होती है। यीशु को तो यह लोग भूल जाते हैं, और उस प्रेरित और पास्टर को अधिक महत्व देते हैं, क्योंकि उनके मनों मैं यह बैठा दिया जाता है कि यह पास्टर साब पवित्र आत्मा से भरा हुआ हैं। ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर ऊपर हाथ उठाते हुए कई बार गिर जाते हैं। मैं जब अपनी बाइबल का अध्ययन करता हूँ तब मुझे ऐसा कुछ पढ़ने को नहीं मिलता। पतरस पिन्तेकुस्त के दिन एक भीड़ को प्रचार कर रहा था, और लिखा है कि प्रवचन सुनकर सुननेवालों के मन छिद गये तब वह पूछने लगे कि अब हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, सब अपना-अपना मन बुराई से फिराओ और बपतिस्मा लो, और लिखा है कि उसी दिन 3000 लोगों ने बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 2)। कोई हल्ला-गुल्ला नहीं।

यीशु ने साफ-साफ कहा था, ''जाओ, इसलिये सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। (मत्ती 28:18, 19)। याद रखिये, शैतान जिसे स्वर्गदूत भी कहा गया है, इन पास्टरों और प्रेरितों का रूप धारण करके लोगों को मूर्ख बनाकर वाह-वाह लूट रहे हैं। एक दिन यह सब जब न्याय आसन के सामने खड़े होऐंगे तब यीशु इनसे कहेगा कि, ''जो मुझे से हे प्रभु, हे प्रभु

कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझसे कहेंगे हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से अचम्भे के काम नहीं किये? तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ, (मत्ती 7:21-23)।

न्याय के दिन आपका जवाब क्या होगा? इस पृथ्वी पर बहुत से झूठे प्रचारक भोले-भालों लोगों को मूर्ख बना रहे हैं, और उन्हें यह जानना चाहिए कि इन सबको अपना-अपना लेखा देना होगा। (रोमियों 14:12)। आज मसीहीयत के नाम पर सब अपनी-अपनी डपली बजा रहे हैं, परन्तु पौलुस यह कहता है, ''कि मैं तुम से बिनती करता हूँ मेरे भाईयों, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं उन्हें ताड़ लिया करो, और उनसे दूर रहो।'' (रोमियों 16:17)। आगे प्रेरित पौलुस कहता है, ''क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे-सादे मन के लोगों को बहका देते हैं। एक और बड़ी महत्त्वपूर्ण बात उसने कही थी कि तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई हैं, इसलिये मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूँ, परन्तु मैं यह चाहता हूँ कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो। शांति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पावों से शीघ्र कुचलवा देगा (पद 19)। मित्रों, धोखा न खाओ परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता। (गल. 6:7)।

नरक दो प्रकार के लोगों के लिये है, वे जो सब कुछ करते हैं, और वे जो कुछ भी नहीं करते

सनी डेविड

मनुष्य की प्रवृति कुछ इस प्रकार की है कि वह हमेशा अच्छी-अच्छी बातें ही सुनना चाहता है। परन्तु हमारे जीवनों में कुछ ऐसी बातें भी होती हैं जो भले ही हमें अप्रिय लगती हैं परन्तु वे एक सच्चाई की तरह हमारे सामने होती हैं, और हमें उनका सामना करना पड़ता है। हम बीमार पड़ना नहीं चाहते, लेकिन फिर भी हम बीमार हो जाते हैं। हम प्रत्येक समस्या से बचना चाहते हैं, परन्तु तौभी किसी न किसी उलझन में हम पड़ ही जाते हैं। हम मरना नहीं चाहते, किन्तु एक न एक दिन हमें अवश्य ही मरना पड़ेगा। इसी तरह, हम सुनना चाहते हैं परमेश्वर के प्रेम के विषय में, कि वह हम से कितना प्रेम करता है। परन्तु हम परमेश्वर के क्रोध के बारे में नहीं सुनना चाहते। क्योंकि हम परमेश्वर को हमेशा एक प्रेमी पिता के ही रूप में देखना चाहते हैं। परन्तु परमेश्वर की पुस्तक हमें यह बताती है कि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8), वही पुस्तक हमें उसके बारे में यह भी बताती है कि वह भस्म करनेवाली आग है; और जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है। (इब्रानियों 12:29; 10:31)। परमेश्वर की

जिस पुस्तक में हमें स्वर्ग के बारे में मिलता है उसकी उसी पुस्तक में हम नरक के सम्बन्ध में भी पढ़ते हैं। हम में से कोई भी नरक में नहीं जाना चाहता, परन्तु हम सब स्वर्ग में जाना चाहते हैं। लेकिन स्वर्ग में जाने से पहिले यह ज़रूरी है कि हम नरक से बचें। इसलिए आज मैं आप को यह बताना चाहूंगा कि बाइबल नरक के बारे में क्या कहती है?

प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, कि जब वह न्याय करने के लिए जगत के अन्त में आएगा, तो जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरूत्थान के लिए जी उठेंगे, और जिन्होंने बुराई की है वे दन्ड के पुनरूत्थान के लिए जी उठेंगे। और फिर उसने कहा कि पृथ्वी के सारे लोग उसके सम्मुख उपस्थित होंगे और वह उनका न्याय करेगा, और सारे अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (यूहन्ना 5:29; मत्ती 25:31-46)। अर्थात् सबसे पहिली बात हम नरक के सम्बन्ध में यह देखते हैं, कि वह एक ऐसा स्थान है जो अनन्त है, जिसका कभी अन्त न होगा और जो लोग उसमें जाएंगे वे वहां अनन्त दन्ड भोगेंगे। इसी प्रकार बाइबल में नरक के सम्बन्ध में हम पढ़ते हैं कि वह एक आग का कुँड है (मत्ती 13:42)। जहां अंधकार पूर्ण वातावरण में हमेशा का रोना और पीड़ा के साथ दातों का पीसना है। (मत्ती 25:30)। अर्थात् नरक आग का एक ऐसा कुन्ड है, जहां हमेशा का अंधकार, पीड़ा, रोना और दांतों का पीसना है।

यद्यपि अभी हमने देखा, कि प्रभु यीशु ने कहा, कि अधर्मी नरक में अनन्त दन्ड भोगेंगे। परन्तु वे किस प्रकार के लोग होंगे? पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओं, न वेश्यागामी, न मूर्त्तीपूजक, न परस्त्रीगमी, न लुच्चे, न पुरूषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।'' (1 कुरिन्थियों 6:9, 10)। परन्तु यदि ये सब लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे तब वे कहां जाएंगे? अवश्य ही नरक में। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, कि धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे और ये अनन्त दन्ड भोगेंगे। (मत्ती 25:46)। सो नरक में किस प्रकार के लोग होंगे? इस बारे में पहिली बात हम यह देखते हैं, कि नरक ऐसे लोगों से भरा होगा जो सब कुछ करते हैं। जिन्हें परमेश्वर का कोई भय नहीं है। जो अपने स्वार्थ की पूर्ति और पृथ्वी पर सुखी जीवन के लिए सब कुछ करने को तैयार रहते हैं।

परन्तु फिर बाइबल हमें यह भी बताती है, कि नरक में ऐसे लोग भी होंगे जो कुछ भी नहीं करते। यह बात सुनकर शायद आप कुछ अचम्भा करें। लेकिन इस बात को समझने के लिए हम बाइबल में लिखे प्रभु यीशु के एक दृष्टान्त को इस समय पढ़ेंगे। यह दृष्टान्त हमें बाइबल में मत्ती की पुस्तक के 25 अध्याय में मिलता है। यहां प्रभु यीशु ने इस प्रकार कहा, ''क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिसने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर, अपनी सम्पत्ति उन्हें सौंप दी। उसने एक को पांच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात् हर एक को उसकी सामर्थ के अनुसार दिया, और तब परदेश चला गया। तब जिसको पांच तोड़े मिले थे, उसने तुरन्त जाकर उससे लेन-देन

किया, ओर पांच तोड़ें और कमाए। इसी रीति से जिसको दो मिले थे, उसने भी दो और कमाए। परन्तु जिसको एक मिला था, उसने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी के रूपए छिपा दिए। बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आकर उनसे लेखा लेने लगा। जिसको पांच तोड़ें मिले थे, उसने पांच तोड़े और लाकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़ें सौंपे थे, देख, मैंने पांच तोड़े और कमाए हैं। उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा, अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो। और जिसको दो तोड़े मिले थे, उसने भी आकर कहा; हे स्वामी तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख मैंने दो तोड़े और कमाए। उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा, अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो। तब जिसको एक तोड़ा मिला था, उसने आकर कहा; हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है: तू जहां कहीं नहीं बोता वहां काटता है, और जहां नहीं छींटता वहां से बटोरता है। सो मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया; देख, जो तेरा है, वह यह है। उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास; जब तू यह जानता था, कि जहां मैंने नहीं बोया वहां से काटता हूं; और जहां मैंने नहीं छींटा वहां से बटोरता हूं। तो तुझे चाहिए था, कि मेरा रूपया सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता।'' सो उसने कहा, ''इसलिये वह तोड़ा उससे ले लो, और जिसके पास दस तोड़े हैं, उसको दे दो। क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिसके पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। और इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा।'' (मत्ती 25: 14-30)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने सिखाया, कि न्याय के दिन बहुत से लोग नरक में इसलिये जाएंगे क्योंकि उन्होंने अपने उत्तरदायित्व को ठीक से नहीं निभाया; जो उन्हें सौंपा गया था उसका इस्तेमाल उन्होंने नहीं किया; अपनी आशीष और योग्यताओं का उन्होंने उपयोग नहीं किया। उन्होंने कुछ नहीं किया, और इस कारण वे नरक के उस कुन्ड में डाले जाएंगे जहां रोना और दांत पीसना है!

सोचिए कि कितनी आशीषें परमेश्वर ने आप को दी है। हर एक हफ्ते में उसने आपको एक-सौ-अड़सठ घंटे दिए हैं; हर एक दिन में उसने आपको चौबीस घंटे दिये हैं। क्या आप अपने समय को परमेश्वर की महिमा के लिए उपयोग कर रहे हैं? आप अपनी देह के साथ क्या कर रहे हैं? क्या आप ऐसे काम कर रहे हैं जिनसे उसकी बड़ाई होती हैं? आप अपनी योग्यताओं का क्या कर रहे हैं? आप अपने धन का क्या कर रहे हैं? आप अपने जीवन का क्या कर रहे हैं? क्या इन सबको आप अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं? जो कुछ भी परमेश्वर ने आप को दिया है, उस सब का आप को उसे एक दिन लेखा देना पड़ेगा। फिर सोचिए, कि परमेश्वर ने मनुष्य को पाप के कारण नरक में जाने से बचाने के लिए कितना बड़ा बलिदान किया है? उसने अपने एकलौते पुत्र को जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये कुर्बान कर दिया। परन्तु वह अपने पवित्र

शास्त्र में कहता है, कि यदि मनुष्य उसके पुत्र में विश्वास करेगा, और पाप से मन फिराएगा, और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेगा तो वह अपने पापों से, मसीह के बलिदान के कारण, उद्धार पाएगा। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। क्या हम सब ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया है? क्या हम सब उसकी इच्छानुसार चल रहे हैं? यीशु के द्वारा परमेश्वर ने जगत पर अपने आप को प्रगट किया है। उसने पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में होकर एक सिद्ध जीवन व्यतीत किया, ताकि उसके जीवन को हम अपने जीवनों का आदर्श बनाकर उसका अनुसरण करें, और उसके द्वारा नरक से बचकर स्वर्ग में प्रवेश करें। क्या हम परमेश्वर की योजना का पालन कर रहे हैं?

मित्रों, यह सच है, कि ''न वेश्यागामी, न मूर्तीपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरूषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड, न गाली देनेवाले न अंधेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।'' (1 कुरिन्थियों 6:9, 10)। और, '' डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तीपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है।'' (प्रकाशितवाक्य 21:8)। परन्तु, यही स्थान उन लोगों का भी अनन्त निवास होगा जो परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मानते, जो उसकी इच्छा पर नहीं चलते, और जो लोग अपनी देह को और अपनी आशीषों को और अपनी योग्यताओं को, अर्थात् जो कुछ भी उनके पास है उसे परमेश्वर की महिमा तथा उसकी बड़ाई के लिए उपयोग नहीं करते। लेकिन परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य अपने अधर्म में नाश हो। (2 पतरस 3:9)। वह सबका उद्धार करना चाहता है। (यूहन्ना 3:16)। और वह किसी का पक्षपात नहीं करता। (प्रेरितों 10:34)। यदि मनुष्य नरक में जाएगा तो इसलिए क्योंकि उसने अपना जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत नहीं किया और यदि वह स्वर्ग में जाएगा तो इसलिए क्योंकि उसने अपना जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत किया है। इसलिए चाहिए कि हम सब अपने आपको परमेश्वर के वचन के आईने में जांचें, और अपने आप को परमेश्वर के न्याय के दिन के लिये तैयार करें।

कलीसिया की एकता

जे. सी. चोट

ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक संसार, कलीसिया में एकता लाने के लिये जितना उत्सुक आज है ऐसा पहले कभी नहीं रहा। विश्व भर में लोग इस एक प्रश्न की ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रहे। इसका वास्तविक कारण यह है कि संसार में अत्यधिक फूट है, व यह हर एक के लिये उलझन का कारण है। सत्य यह है कि मनुष्यों के बनाए हुए धार्मिक संगठनों द्वारा, जो कि एक दूसरे के विरोधी है, एकता कभी भी नहीं लाई जा सकती। यद्यपि कुछ सीमा तक एकता का अनुभव किया जा सकता है परन्तु विभाजन अथवा फूट की समाप्ति नहीं हो सकती। तब इसका उत्तर कहां मिल

सकता है? नि:संदेह बाइबल में। यथार्थ में एकता लाने के लिये मनुष्यों को चाहिए कि वे अपनी शिक्षाएं, सिद्धांत, नाम, और अपनी कलीसियाएं तथा धर्मसारों को त्याग दें, और बाइबल को हाथ में लें, उसे पढ़ें व उसका अध्ययन करें, उस पर विश्वास करें, तथा उसकी आज्ञाओं को मानें। केवल तभी सच्ची एकता आ सकती है, उसी प्रकार की एकता जिसके लिये प्रभु यीशु ने प्रार्थना की, व जिसका उल्लेख यूहन्ना के 17 वें अध्याय में हमें मिलता है। जब लोग ऐसा करेंगे, वे सब विश्वास में एक होंगे, सब एक ही शिक्षा को मानेंगे, सब एक ही नाम से कहलाएंगे, सब एक साथ मिलकर कार्य करेंगे, सब एक ही शिक्षा देंगे, और सब एक साथ स्वर्ग में जाएंगे। जब मनुष्य, मनुष्य का अनुसरण करना छोड़कर मसीह का अनुसरण करने लगेंगे तब एकता का वर्तमान होना बहुत सरल हो जाएगा।

पवित्रशास्त्र विभाजन की निंदा करता है। बाइबल में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर उनसे बैर रखता है जो फूट डालते हैं व भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करते हैं। (नीतिवचन 6:19)। 1 कुरिन्थियों के पहले अध्याय से हमें ज्ञात होता है कि कुरिन्थुस में कलीसिया विभिाजित हो रही थी। इसकी सराहना करने के विपरीत, प्रेरित पौलुस ने इसका खंडन किया, और इसके मूल कारणों का नाश करने के लिये शीघ्र ही उसने कदम उठाया। उसने कहा, "हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा विनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।" (1 कुरिन्थियों 1:10)। फिर उसने तीन प्रश्न पूछे, और प्रत्येक प्रश्न उनकी भ्रांति व अशुद्धि को दर्शाता था। प्रश्न ये थे : क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला? इन तीनों प्रश्नों के उत्तर नकारात्मक थे, इसलिये, उसने उन्हें उनकी विभाजित स्थिति की मूर्खता को बतलाया।

इसी प्रेरित पौलुस ने रोम में भाइयों को लिखा, "अब हे भाइयों, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते है; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।" (रोमियों 16:17, 18)। इसी प्रकार से कुलुस्सियों 2:20-22 में उसने कहा, "जबकि तुम मसीह के साथ संसार कि आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर उनके समान जो संसार में जीवन बिताते है मनुष्यों की आज्ञाओं, और शिक्षानुसार, और ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो? कि यह न छूना, उसे न चखना, और उसे हाथ न लगाना। (क्योंकि ये सब वस्तु काम में लाते-लाते नाश हो जाएंगी)।" (मत्ती 15:9)।

मनुष्यों की शिक्षाओं, व सिद्धांत, और उसकी आज्ञाएं, मनुष्यों की प्रशंसा करना, बाइबल के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को स्वीकार करना तथा उनका अनुकरण करना, यह सब वस्तुएं फूट का कारण है। दूसरी ओर एकता आ सकती है परन्तु यह केवल तभी संभव हो सकता है यदि सब मसीह का अनुकरण करने लगे। यीशु मसीह ने स्वयं प्रार्थना

करी, "मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हो, इसलिये कि जगत प्रतीति करें, कि तू ही ने मुझे भेजा।" (यूहन्ना 17: 20, 21)। अब, क्या यीशु मसीह ने असंभव कार्य के लिये प्रार्थना की? नहीं। नि:संदेह तब एकता का होना संभव है। परन्तु कब? जब हम सब मसीह का अनुसरण करने लगेंगे। मनुष्यों की शिक्षाएं हमें विभाजित करेंगी परन्तु बाइबल की शिक्षा हमें एक करेगी।

इफिसियों 4:1-6 में हमें एकता के लिये एक सूत्र मिलता है। इसको देखें, "सो मैं जो प्रभु में बंधुआ हूं तुम से विनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बंधन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है।" इस पर ध्यान दें कि यह एकता के लिये एक निवेदन है। और विशेषकर इस पर ध्यान दें कि जितनी भी वस्तुओं का उल्लेख यहां हुआ है वे सब एक-एक हैं। तब यह विचार कैसे उत्पन्न हो गया कि ये एक से अधिक है?

कलीसिया की एकता बहुत स्पष्टता से दिखाई देती है जब हम पढ़ते हैं, यीशु मसीह ने कहा कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा (मत्ती 16:18), अर्थात् एक, व यह उसकी आत्मिक देह है (1 कुरिन्थियों 12: 27), और वह स्वयं इसका सिर है (कलुस्सियों 1:18)। नि:संदेह कोई भी व्यक्ति यह स्वीकार नहीं करेगा कि मसीह की दो देह या दो सिर है। इसके अतिरिक्त 1 तीमुथियुस 3:15 में कलीसिया को परमेश्वर का घर अर्थात् परमेश्वर का परिवार बताया गया है। परन्तु कितने घर या कितने परिवार? अवश्य ही एक। फिर, मसीह के राज्य अर्थात् परमेश्वर के राज्य के विषय में हम पढ़ते है, व यह भी कि मसीह इसका राजा है। (यूहन्ना 3:3-5; कुलुस्सियों 4:11; 1 तीमुथियुस 6:15)। किन्तु प्रभु के कितने राज्य है व राजा कितने हैं? केवल एक, दोनों ही स्थिति में।

इस विषय में जितना भी अध्ययन हम करेंगे हम पाएंगे कि साम्प्रदायिकता अर्थात् फूट के विचार तक से बाइबल विरोध करती है। दूसरी ओर हम देखते हैं कि बाइबल एकता, सम्पूर्णता, एकभाव, तथा समग्रता को दर्शाती है। बाइबल कलीसिया को इस प्रकार से नहीं दर्शाती की वह एक अध्यात्मिक देह है जो कि भिन्न-भिन्न विश्वास वाले तथा विभिन्न शिक्षाओं को माननेवाले धार्मिक लोगों से मिलकर बनी हुई है, किन्तु बाइबल हमें शिक्षा देती है कि कलीसिया का संबंध यीशु मसीह से है, यह बुलाए हुए लोगों की एक मंडली है, वे लोग जिन्होंने प्रभु यीशु का अनुकरण किया है व उसकी आज्ञाओं को माना है, अर्थात् जिन्हें उद्धार प्राप्त हुआ है वे इसके सदस्य है। न तो मसीह बटा हुआ है और न ही उसकी कलीसिया बटी हुई है। विभाजित होने अथवा विभाजन का समर्थन करने का अभिप्राय यीशु मसीह का विरोध करना व उसकी प्रार्थना का विरोध करना है।

यदि कोई पुरूष ही स्त्री को मण्डली में बोलने को कहे तो?

बैटी बर्टन चोट

''विमेनस लिब्रेशन'' जैसी मूवमेंटों के प्रभाव के कारण इस युग में स्त्रियों को लीडरशिप की भूमिका लेन के लिए अधिकृत करने के प्रयास में हर प्रकार के तर्क दिए जाते हैं।

यह बात मानते हुए कि पवित्र शास्त्र कहता है, *''मैं कहता हूं कि स्त्री उपदेश न करे और न पुरूष पर आज्ञा चलाए''* (1 तीमुथियुस 2:12), सवाल पूछा जाता है, ''क्या मण्डली के ऐल्डरों या पुरूषों को, स्त्रियों के ऊपर अधिकार है? ऐसे में यदि कोई ऐल्डर स्त्री को मण्डली में प्रार्थना करने या प्रचार में अगुआई करने के लिए बुलाए, तो क्या इसकी अनुमति होगी, क्योंकि ऐसा होने पर वह तो केवल ऐल्डर के अधीन रहते हुए उस की बात को ही मान रही होगी?''

> ***विचार करने वाली बात :*** *यदि पौलुस आज होता और वह कहता, ''मैं [पवित्र आत्मा के अधिकार से] कहता हूं कि स्त्री उपदेश न करे...'' तो जाकर उसके मुंह पर यह कहनेवालों को कैसा लगता कि ''परन्तु में कहता हूं कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता!'' ढिठाई से ऐसी घोषणा करनेवाले नाचीज़ इनसान होते हैं?*

देखने में ऐसा लगता है कि कुछ गलत नहीं है। क्योंकि जब पुरूषों ने ही स्त्री को प्रार्थना करने या उपदेश देने के लिए कहा हो तो इसमें स्त्री पुरूष पर अधिकार कैसे चला रही हो सकती है? परन्तु हमें यह बड़ी महत्वपूर्ण बात भूलनी नहीं चाहिए कि स्त्री का सिर पुरूष है और हर पुरूष का सिर मसीह है (1 कुरिन्थियों 11:3)। पवित्र शास्त्र पवित्र आत्मा के अधिकार के द्वारा लिखा गया था न कि किसी मानवीय लेखक के विचार से। जिन्होंने लिखा कि पुरूष कलीसिया की सभाओं में अगुआई करें, वे अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि वही लिख रहे थे जिसका निर्देश उन्हें पवित्र आत्मा ने दिया था। यानी ये शब्द उन लिखनेवालों के नहीं थे।

कलीसिया में यदि आज कोई ऐल्डर या डीकन पुरूषों और स्त्रियों की मिली-जुली सभा में स्त्री से प्रार्थना करने के लिए या प्रचार करने के लिए कहे तो वह स्त्री को पवित्र शास्त्र के स्पष्ट निर्देशों को टालने को कह रहा है। बेशक पुरूष होने के कारण वह स्त्री की अगुआई कर सकता है, परन्तु वह प्रभु के द्वारा दिए गये निर्देश से बढ़कर अपनी मर्ज़ी नहीं चला सकता! ऐसा कहना वचन के विरूद्ध ढिठाई का पाप है, और पवित्र शास्त्र में उसकी कड़ी निंदा की गई है।

आमतौर पर इन निर्देशों को मानने से गड़बड़ी का आरम्भ पारिवारिक तौर पर इकट्ठे होने के समय होता है। जब दो परिवार इकट्ठे खाना खा रहे होते हैं, और एक आदमी वहां बैठी एक महिला को भोजन के लिए प्रार्थना करने को कह देता है; या घर में प्रार्थना सभा के दौरान जहां मिले-जुले लोग भाग ले रहे होते हैं, जिनमें ''चेन'' प्रेयर

में पुरूषों तथा महिलाओं दोनों के भाग लेने की अपेक्षा की जाती है। यह कलीसिया की सम्पूर्ण आराधना वाली सभा नहीं होती, क्योंकि वे इसे पवित्र शास्त्र की स्पष्ट, आज्ञा के बजाय व्यक्तिगत निर्णय पर छोड़ देते हैं।

परन्तु प्रार्थना का हर अवसर आराधना से भरा ही होता है, और पुरूष के लिए किसी महिला को सब के मनों को परमेश्वर के सिंहासन में ले जाने के लिए कहना वही ढीठपन है। परमेश्वर के सिंहासन में पुरूषों और स्त्रियों की मिली-जुली किसी भी मण्डली में स्त्री के अगुआई करने का न तो कोई उदाहरण है और न ही पवित्र शास्त्र में इसकी कोई अनुमति है। इस कारण ऐसा करने का हमारे पास कोई अधिकार नहीं है।

व्यवस्था की पुस्तक में हमें एक ऐसी ही परिस्थिति मिलती है। परमेश्वर ने कहा था कि यदि काई नबी या स्वप्न दर्शी (जो अपने अधिकार को पवित्र शास्त्र के अधिकार से बढ़कर बताए) इस्त्राएलियों को भ्रमित करने का प्रयास करे, चाहे कोई "*चमत्कार*" '*या चिन्ह या अद्‌भुत काम*' करके दिखाए और कहे कि हम "*अन्य देवताओं के पीछे चलें और उनकी पूजा करें*" तो "*तब तुम उस भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखने वाले के वचन पर कभी कान न धरना; ... तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना, और उसका भय मानना, और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका वचन मानना, और उसकी सेवा करना, और उसी से लिपटे रहना। और ऐसा भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाला तुम को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से फेर के, ... तेरे परमेश्वर यहोवा के मार्ग से बहकाने की बात कहनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह मार डाला जाए ...*" (व्यवस्थाविवरण 13:2-5)।

आज हम मूसा की व्यवस्था के अधीन या उस युग में तो नहीं रह रहे हैं, जिसमें परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़नेवालों को दण्ड देने का अधिकार था, परन्तु हमें जो वह कहता है उसे सुनने और केवल उसी को मानना चाहिए। किसी भी पुरूष या महिला द्वारा परमेश्वर के निर्देशों को फिर से लिखकर उसके ठहराए गये अधिकार के क्रम को बदलकर दूसरी बात सोचना, गम्भीर अपराध है। बेशक, कोई मसीही व्यक्ति ऐसा पाप करने का अपराधी नहीं होना चाहेगा।

विश्वासी भाई (कुलुस्सियों 1:2)

ऑवन डी. आल्ब्रट

पौलुस कुलुस्से के लोगों को प्रभु का विश्वासी मानता था (1:2)। उसने उन्हें झूठी शिक्षाओं से चौकस रहने के लिए यह पत्र लिखा (2:8-23)। न केवल सिखाने वालों को इस बात में चौकस रहने की आवश्यकता है कि वे क्या सिखाते हैं, बल्कि हर मसीही को भी इस बात में चौकस रहना आवश्यक है कि सिखानेवालों की ओर से किस बात पर विश्वास करना और मानना हैं।

धोखा देने वाली शिक्षाएं हमें अविश्वासी बना सकती हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 2:10-12 में धोखा देने वाले झूठों के सम्बन्ध में जो विश्वास करनेवालों को हानि पहुंचा सकते थे, पौलुस ने लिखा झूठी शिक्षाएं उन मसीही लोगों को हानि नहीं पहुंचाएंगी, जो उनसे भरमाए नहीं जाते। भरमाए जाने से बचने के लिए मसीही लोगों के लिए सच्चाई से प्रेम करना (2 थिस्सलुनीकियों 2:10) आवश्यक है जिसे यीशु की शिक्षाओं में बने रहकर सीखा जा सकता है (यूहन्ना 8:31, 32)। सच्चाई यीशु में पाई जाती है (यूहन्ना 1:14, 17; इफिसियों 4:21)।

पतरस ने झूठी शिक्षा देनेवालों को जिन्होंने ''नाश करनेवाले पाखण्ड'' सिखाने से चौकस किया (2 पतरस 2:1)। इफिसुस के प्राचीनों को निर्देश देते हुए पौलुस ने कहा कि उन्हीं में से लोग उठ खड़े होंगे, जो विकृत शिक्षाओं का प्रचार करेंगे (प्रेरितों 20:29-31)। मसीही लोगों के लिए हर शिक्षा को जांचना आवश्यक है, ताकि वे भरमाए न जाएं (1 यूहन्ना 4:1)।

पुराने नियम की दुखद घटनाओं में से यहूदा के एक जवान नबी की है जिसे परमेश्वर की ओर से इस्त्राएल के राजा यारोबाम को संदेश देने के लिए भेजा गया था (1 राजाओं 13:1-25)। उसे परमेश्वर की ओर से, जहां उसे संदेश देना था वहां से कुछ न खाने या पीने को कहा गया था, और जिस मार्ग से वह गया था उससे अलग रास्ते से वापस आने को कहा गया था।

उसने यारोबाम को संदेश दिया, जिसने उसे रूकने और अपने आपको ताज़ा करने, और इनाम पाने को कहा। उसका उत्तर था कि यहोवा की ओर से इसकी मनाही की गई है।

एक बूढ़े नबी ने इस संदेश के बारे में सुना। वह उसके पास गया और उससे कहा, ''जैसा तू नबी है वैसा ही मैं भी नबी हूं: और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुरूष को अपने संग अपने घर लौटा ले आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए। यह उस ने उस से झूठ कहा'' (1 राजाओं 13:18)।

जवान नबी का उस झूठ पर विश्वास करने का परिणाम भयानक था। जब वह अपने घर को जाने लगा तो उसे एक शेर ने मार डाला। उससे केवल परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए संदेश को मानने की उम्मीद की गई थी न कि किसी दूसरे की बात को, चाहे वह किसी स्वर्गदूत का संदेश भी क्यों न हो।

हर मसीही को केवल उसी बात को मानने के लिए चौकस रहना आवश्यक है जिसे यीशु ने अपने नये नियम में प्रकट किया है। इसकी शिक्षाओं के उलट जाने का परिणाम उद्धार के बजाय विनाश होगा। मसीही लोगों के लिए जो कुछ यीशु की ओर से प्रेरणा पाए हुए उन लोगों के द्वारा सिखाया गया है जिन्होंने नये नियम को लिखा है, मानना आवश्यक है। हर मसीही के लिए ''प्रेरितों से शिक्षा पाने में लौलीन'' रहकर आरम्भिक कलीसिया के नमूने का पालन करना आवश्यक है (प्रेरितों 2:42)।

सेवक शिक्षक (1 थिस्स. 2:1-12)

अर्ल डी एडवर्डस

इस पत्री में अध्याय 2 का पहला आधा हिस्सा, पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस के भेजे जाने पर केन्द्रित है। पौलुस थिस्सलुनीकियों को स्मरण कराने के लिए उत्सुक था कि जब वे एक साथ रहते थे, और जो रिश्ता उनके बीच में बना, उससे क्या सीखा जा सकता है। शिक्षकों के गुण को नकारात्मक और उसके बाद सकारात्मक रूप से वर्णन किया गया है, ताकि युवा मसीही सीख पाए कि यह हर एक मसीही का काम है कि वह नमूना बने और सुसमाचार का प्रचार भी करे।

2:1-12 में, ऐसा प्रतीत होता है मानो पौलुस घमण्ड कर रहा था; परन्तु एक परीक्षण से पता चलेगा कि इस भाग का उद्देश्य रिश्तों, व्यवहारों और उद्देश्यों को परखना था। क्यों? वह इन युवा मसीहियों को ऊपर उठाने के लिये प्रोत्साहन और प्रेरणा देना चाहता था। ये आयतें हमें हमारे अपने उद्देश्यों, व्यवहारों, और रिश्तों को परखने, और उन्हें सुधारने में भी सहायता करते हैं।

परमेश्वर की सेवा करना हमारा उद्देश्य है (2:1-3)। क्या है जो दूसरों से मेल-मिलाप को प्रभावशली बनाता है? जब वे प्रचारक पहली बार थिस्सलुनीके में आये, तब कठिन परिस्थितियों में उन्होंने ऐसा ही किया; परन्तु परिणामस्वरूप उनका आना एक बड़ी आशीष को दिखाता है। उनका आना ''व्यर्थ में'' या ''बिना उद्देश्य के'' नहीं था। आयत 1 हमें उत्साहित करती है कि नई जगह को एक बड़ा अवसर मानकर ''सबके साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाईयों के साथ'' (गलातियों 6:10)। यदि हम इसकी शुरूआत सकारात्मक दृष्टिकोण से करें, तो हम एक मुस्कराहट, आभार प्रकट करने, और सहायता की भावना के साथ सदा के लिये प्रभाव डाल सकते हैं। हमारा आना कभी ''व्यर्थ'' नहीं होगा यदि परमेश्वर की सेवा के लिये -हम अपने उद्देश्य को जानते हैं, तो परिस्थिति चाहे जो भी हो हम अपना कार्य करेंगे।

हम हमेशा बहुत से अवसरों को खो देने के कारणों को पाते हैं। अकसर, असफलता का डर या विरोध का डर, हम जो कर सकते हैं उसे करने से हमे रोकता हैं। आयत 2, आयत 1 की परिस्थितियों का विवरण देती है। फिलिप्पी में शिक्षकों ने ''दुःख उठाया'' और उनके साथ ''बुरा व्यवहार किया गया।'' प्रेरितों 16:19-23 स्पष्ट बताता है कि, उन्हें बन्दी बनाया गया, खींचकर ले जाया गया, मारा पीटा गया, और बन्दीगृह में डाला गया, और कोठरियों में रखा गया।

आज यदि इनमें से किसी एक तरीके से भी हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाए तो हम अधिक सहानुभूति, कुछ क्षतिपूर्ति, और कम से कम एक सप्ताह विश्राम करने की छुट्टी, और पुनः स्वस्थ होने की अपेक्षा करेंगे। हम यह भी समझ सकते हैं कि इन परिस्थितियों में लोग छोड़कर जा भी सकते हैं।

वे प्रचारक फिलिप्पी से अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए,

और वहाँ आराधनालय में मसीह का प्रचार आरंभ किया (प्रेरितों 17:1-3)। जिसके परिणाम में अधिक विरोध हुए-'' विरोध होते रहे''-परन्तु वे प्रचार करते रहे! रूकावट उत्पन्न करनेवाले कुछ विरोधियों के साथ सामना करने से उनकी समस्याएँ बहुत बढ़ गई। ''बुरा व्यवहार किया गया'' और ''अधिक विरोध'' जैसे शब्दों के अनुवाद निरादर, संघर्ष, क्लेश, और निराशा को लेकर आते हैं! कुछ लोग जो मसीहियों को थिस्सलुनीके में सत्ता रहे थे वे उन्हें बुरी तरह हानि पहुँचाने की सोच चुके थे इसलिये वे अपने शिक्षकों के पीछे साठ मील दूर बिरिया में हलचल मचाने आ पहुँचे (देखें प्रेरितों 17:13)।

कठिन परिस्थितियों में हम निरूत्साहित हो सकते हैं। अपना काम हम छोड़ देना चाहते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम इन चुनौतियों को अलग से मिले हुए अवसर के समान देखें कि वैसा जीयें जैसा परमेश्वर हमसे चाहता है। परमेश्वर को आदर देने, अच्छा उदाहरण बनने, और दूसरों को जो इसी रीति से दु:ख उठा रहे हैं उन्हें प्रोत्साहित करने के ये अतिरिक्त अवसर हैं।

गलत इरादों के साथ सही काम करना सम्भव है, परन्तु परेमश्वर सम्पूर्ण गतिविधियों को देखता है। यदि हमारा मन गलत है, तब हमारे काम छल से भरे हुए हैं। हमारे लिये भला होगा कि हम अपने इरादों को परखें, और लोगों को अपनी भली इच्छा के बारे में बताएँ। ये प्रचारक घोषणा कर रहे थे कि उनकी इच्छाएँ विश्वासयोग्य और स्पष्ट थी (2:3)। वे अच्छे आचरण का मूल्य जानते थे क्योंकि वे हानि को देख चुके थे जो ''भ्रम,'' ''अशुद्धता'' और ''छल'' के द्वारा एक शिक्षक के जीवन में की जा सकती है। इसके विपरीत, वे भक्तिपूर्ण जीवन के बड़े महत्व को भी जानते थे।

परमेश्वर को हमारे कार्यों का ध्यान है, परन्तु पहले उसे हमारे मन का व्यवहार, उसके इरादों, और उसकी इच्छाओं का ध्यान है। प्राचीन कलीसिया में सुसमाचार के प्रचार में कुछ लोगों के इरादे गलत थे (फिलिप्पियों 1:15-17)। पौलुस सच्ची भावना से कहता है कि जो उसके सन्देश को सुनते थे, उनसे आदर और पैसे लेने का उसे कोई लोभ नहीं था (2:6, 9)।

दूसरे लोग हमारे इरादों को नहीं जानते, परन्तु परमेश्वर जानता है। इसलिये, विश्वासी होन के कारण हमारी उन्नति को ध्यानपूर्वक देखना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अपने इरादों को जाँचना हैं। दूसरा, हम बहुत सरलता या कठोरता से परख सकते हैं, परन्तु परमेश्वर हमेशा सही सही जाँचता है।

जिस रीति से हम जीते हैं उसके कारणों को परमेश्वर कैसे देखता है? हमारे उद्देश्यों में परमेश्वर की परख को रखना बहुत कठिन है क्योंकि मनुष्य का परखना उसमें हस्तक्षेप करते हैं। यदि कोई भी हमारी आलोचना नहीं करता, तो हम मानते हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं। यदि बहुत से लोग हमारी आलोचना करते हैं तो हम झट से बीमार पड़ जाते हैं। कुछ लोगों के लिये आलोचना असफलता का पर्यायवाची होता है। मसीही होने के कारण हमें स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर हमें और हमारी इच्छाओं को जानता है।

सही होने से भी बढ़कर

(रोमियों 14:1-15:13)

डेविड रोपर

हमने पहले भी देखा है कि रोमियों 14 के नियम लोगों को किसी भी समय असहमत होने पर सहायता कर सकते हैं। एवर्ट हाफर्ड विवाह में अकेले चलने वाले दम्पत्तियों से बात करते समय इसी वचन का इस्तेमाल करते हैं। इस अध्याय से बनाया जाने वाला उनका नियम यह है: ''यदि आप सही हैं तौ भी हार जाना कोई बात नहीं है।'' हम में से कइयों को यह बात अजीब लग सकती है क्योंकि हम हमेशा अपनी बात में *सही* होना चाहते हैं। अमेरिकी राजनेता हैनरी क्ले (1777-1852) यह कहने के लिए प्रसिद्ध था, ''मैं राष्ट्रपति होने से बढ़कर सही होना बेहतर जानता हूं।'' सही *होने* से मतलब यह है कि हम अपने साथ असहमत होनेवाले किसी भी व्यक्ति से *मनवाना* चाहते हैं कि हम सही हैं।

रोमियों 14 की पौलुस की चर्चा सदी की कलीसिया में मांस खाने के विवाद के गिर्द ही घूमती थी। उसने इस बात में कोई संदेह नहीं रहने दिया कि इस मुद्दे पर कौन सही है। उसने कहा, कि जो व्यक्ति ''साग-पात ही खाता है'' वह ''निर्बल'' भाई है (14:2)। उसने कहा कि ''कोई वस्तु [कोई भी खाना, मांस सहित] अपने आप में अशुद्ध नहीं है'' (14:14) और इसे ''मज़बूत'' स्थिति के रूप में पेश किया (देखें 15:1)। तौभी पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि उस मुद्दे पर सही होने से ज़्यादा अधिक आवश्यक बातें भी हैं।

सही होने से ज़्यादा अधिक आवश्यक क्या हो सकता है? रोमियों 14:13-23 में पौलुस ने अधिक महत्व की कई बातें बताई। 13 से 18 आयतों में पौलुस ने ज़ोर दिया कि विचार के मामलों में सही होने से आवश्यक *किसी भाई को हानि ने पहुंचाना* है (आयतें 13, 15)। इस पाठ में हम 19 से 23 आयतों का अध्ययन करेंगे। यह वचन साथी मसीही लोगों को हानि न पहुचाने की आवश्यकता को रेखांकित करता रहेगा, परन्तु एक अतिरिक्त विचार भी बताया जाएगा। कुछ न करके, या उसे अकेला छोड़कर, हम किसी भाई को हानि न पहुंचाने की पौलुस की बात को मान सकते हैं। इस पाठ के लिए वचन सकारात्मक ज़ोर देने को शामिल करने अर्थात कुछ करने की आवश्कता से आगे ले जाता है। एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि ''सही होने से बढ़कर *किसी भाई की सहायता करना* अधिक आवश्यक है'' (देखें आयत 19)। इन आयतों में आगे बढ़ते हुए हम कई विभिन्नताएं देखेंगे।

बनाना बनाम बिगाड़ना (14:19, 20क)

बनाना

हमारा वचन पाठ ''इसलिए'' शब्दों से आरम्भ होता है। ''इसलिए'' यूनानी शब्द oun से लिया गया है, जिसका अनुवाद 13 और 16 आयतों में ''अत:'' किया गया है।

अपने विचार को बढ़ाते हुए पौलुस ने ज़ोर दिया कि हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए: ''इसलिए हम उन बातों का प्रयत्न करें, जिनसे मेल-विलाप और एक-दूसरे का सुधार हो'' (आयत 19)। ''प्रयत्न करें'' (dioko से) सक्रिय शब्द है। AB में है ''सो आओ फिर निश्चित रूप से लक्ष्य बनाएं, और उत्सुकता से उसे पूरा करने के लिए काम करें। ...''

हमें उत्सुकता से क्या काम करना चाहिए? पहले तो, ''उन बातों में लगे रहें जिनसे मेल मिलाप हो।'' कुछ बातों से शत्रुता बढ़ती है और कुछ बातों से मेल बढ़ता है। अपनी मर्ज़ी मनवाने पर ज़ोर देन से झगड़ा बढ़ता है, जबकि दीन मन होना शान्ति को बढ़ावा देता है (देखें याकूब 3:17)। स्वार्थ का अत्यधिक ध्यान होना झगड़ा बढ़ाता है, जबकि दूसरों की चिन्ता करना मेल बढ़ाता है (देखें फिलिप्पियों 2:4)। बहस जीतने की कोशिश करना नाराज़गी बढ़ाता है जबकि दूसरे व्यक्ति को समझने की कोशिश करना शान्ति बनाता है (देखें नीतिवचन 15:1)।

दूसरा, हमें ''एक-दूसरे का सुधार'' करने की कोशिश करनी है। ''सुधार'' शब्द यूनानी के oikodome से लिया गया है। इस शब्द का मूल अर्थ ''या'' कोई और सुधार है'' (oikos [''घर''] के साथ demo [''बनाना'']। नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल सांकेतिक रूप में दूसरों को आत्मिक रूप से बनाने और मज़बूत करने के लिए किया गया है। कलीसिया को इसकी आवश्यकता कैसे हैं! एक जगह पौलुस ने कहा है, ''सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए'' (1 कुरिन्थियों 14:26; देखें 1 कुरिन्थियों 8:1)।

''एक-दूसरे का सुधार ''में'' एक-दूसरे'' वाक्यांश को नज़र-अन्दाज़ न करें। जिस बात का पौलुस प्रस्ताव रख रहा था, उससे ''निर्बल'' भाई और ''मज़बूत'' भाई *दोनों* को सहायता मिलनी थी। ज्ञान में बढ़ने पर ''निर्बल'' भाई का पालन-पोषण और रक्षा होनी आश्वयक थी। परन्तु ''मज़बूत'' भाई को भी बढ़ने की आवश्यकता थी; उसे प्रेम में बढ़ने की आवश्यकता थी।

जिम्मी एलन रोमियों 14:19 को ''पूरे भाग की मुख्य आयत'' मानता है। 14:13-18 के अपने अध्ययन में मैंने कई प्रश्न शामिल किए हैं, जो दूसरे मसीही लोगों के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में अपने आप से पूछने चाहिए। इस सूची में दो प्रश्न ये हैं: ''क्या मेरे कामों से मेरे भाई का सुधार होगा?'' और ''क्या उनसे कलीसिया का सुधार होगा?'' (देखें इफिसियों 4:12ख)।

बिगाड़ना

बनाना का विपरीत शब्द बिगाड़ना है। आयत 20 में पौलुस ने सुधार के अपने रूपक को जारी रखा: ''भोजन के लिए परमेश्वर का काम न बिगाड़'' (आयत 20क)। ''बिगाड़'' का अनुवाद kataluo से किया गया है, जिसमें ंजं से गहरा हो जाने वाला शब्द सनव (''खोलना, घोलना, तोड़ना, नष्ट करना'') है। kataluo का अर्थ ''पूरी तरह नष्ट करना, बिल्कुल बर्बाद करना'' है।

हमें क्या नहीं बिगाड़ना चाहिए? ''परमेश्वर के काम को।'' इस वाक्यांश में वह सब हो सकता है, जो परमेश्वर ने मनुष्यजाति के उद्धार के लिए किया है। संदर्भ में इसका

हवाला उस काम के परिणाम के अन्त तक अर्थात् मसीह में भाइयों और बहनों के लिए है। पौलुस के शब्द यह दिखाने के लिए बनाए गए थे कि विचार के मामलों पर झगड़ना कितना बेतुका और त्रासदीपूर्ण है। जे. बी. फिलिप्स ने आयत 20 के पहले भाग को इस प्रकार लिखा है: ''निश्चिय ही हमें मांस की एक प्लेट के लिए परमेश्वर के काम को बिगाड़ने की इच्छा नहीं करनी चाहिए।''

यह ताड़ना पढ़ते हुए कि ''भोजन के लिए परमश्वेर के काम को न बिगाड़'' मुझे कुछ लोगों का ध्यान आता है। जिन्होंने पहली सदी के मांस खाने के मुद्दे की तरह विचार की भिन्नताओं, दिल दुखाने, काल्पनिक उपेक्षाओं और ऐसे छोटे-छोटे महत्वहीन मामलों को ''मुद्दे'' बना कर मण्डलियों को बिगाड़ दिया। कितना दुखद है!

बनाने के बजाय बिगाड़ना हमेशा आसान रहा है। किसी बच्चे को हथौड़ा देकर उसे कहा जाए कि घर को तोड़ दे तो वह मिनटों में बहुत-सा नुकसान कर सकता है। उसे हथौड़ा देकर कहो कि वह घर बना दे, तो वह चाहे जितना समय लगाए उसे बना नहीं सकता। कलीसिया में बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनका काम एकमात्र ''तोड़ना है'' अर्थात् लोगों की गलतियां निकालना और काम को बिगाड़ना होता है। परमेश्वर की सहायता से बनाने वाले बनने का निश्चय करें।

भलाई करना बनाम बुराई करना (14:20ख, ग, 21)

भजन लिखनेवाले ने लिखा है: ''बुराई को छोड़ और भलाई कर'' (भजन संहिता 34:14क; देखें 2 पतरस 3:11)। हमारे वचन पाठ के अगले भाग में पौलुस ने किसी भाई को दुखी न करने के महत्व पर ज़ोर के लिए ''भलाई'' और ''बुराई'' शब्दों पर ज़ोर दिया।

वह जो बुरा है

14:14 में पौलुस ने कहा कि ''कोई वस्तु अपने आप में अशुद्ध नहीं।'' यहां उसने वैसा ही दावा किया: ''सब कुछ शुद्ध [katharos] तो है'' (आयत 20क)। पिछले वाक्य की तरह इसमें भी कोई खूबी होनी थी। पहले पौलुस ने ''अशुद्धता'' (akathartos, ''गंदगी'') (1:24; 6:19) की बात की थी, सो वह नहीं मानता था कि कोई भी चीज़ और हर चीज़ ''शुद्ध'' है। इस चर्चा में विशेष रूप से उसके मन में मांस की बात थी कि अपने आप में हर प्रकार का मांस ''वास्तव में शुद्ध है।'' (NIV में ''हर भोजन शुद्ध'' है।)

''परन्तु'' पौलुस ने आगे कहा, ''उस [विभिन्न प्रकार के मांस] मनुष्य के लिए बुरा है [kakos], जिस को उसके भोजन करने से ठोकर लगती है'' (14:20ग)। मूल धर्म शास्त्र में इस ''मनुष्य'' की पहचान अस्पष्ट है। मुलतया यूनानी शब्द का अर्थ ''ठोकर लगने के द्वारा खाने वाला आदमी'' है। यह शब्दावली किसी ''निर्बल'' भाई के विषय में हो सकती है, जिसका विवेक मांस खाने से ठोकर खाता है (देखें आयत 23)। अगली आयत के प्रकाश में ये शब्द सम्भवतया ''मज़बूत'' भाई के लिए हैं, जो ''निर्बल'' भाई के सामने मांस खाता है और उसके विवेक को भंग करने के लिए उसे

प्रोत्साहित करता है। ह्यूगो मेकोर्ड के अनुवाद में है ''वह व्यक्ति जो वह चीज़ खाता है, जिससे किसी को ठोकर लगती है।''

वह जो भला है

यदि वह ''बुरा'' है तो ''भला'' क्या है? पौलुस ने इस प्रश्न का उत्तर दिया: ''भला तो यह है, कि तू न मांस खाए और न दाख रस पीए, न और कुछ ऐसा करे, जिस से तेरा भाई ठोकर खाए'' (आयत 21)।

आयत 17 में पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर का राज्य खाना *पीना* नहीं, ''जिसमें उसने इस चर्चा में ''दाखरस'' पीने की बात जोड़ी। इसे जोड़ने की पौलुस ने कोई व्याख्या नहीं दी, इसलिए हम पक्का नहीं जान सकते कि उसके मन में क्या था। शायद यह केवल इसलिए जोड़ा गया कि खाना और पीना भोजन के तत्व हैं। पौलुस कह रहा होगा, ''अपने भाई को हानि पहुंचाने के बजाय मैं उपवास रखना पसन्द करुंगा!'' यदि प्रेरित ने यह चाहा होता कि ''दाखरस'' शब्द को महत्व दिया जाए, तो शायद यह इसलिए था क्योंकि दाखरस किसी न किसी तरह मूर्तियों की पूजा से जुड़ा था। पुराने नियम में दानिय्येल ने राजा की मेज से दाखरस और भोजन दोनों लेने से इनकार कर दिया था (दानिय्येल 1:8)। शायद उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि भोजन, अर्थात खाना और पीना बाबुल के देवताओं को अर्पित किया गया (भोजन के लिए परमेश्वर को हमारे धन्यवाद देने की तरह, मूर्तियों को लगाया गया भोग) था।

परन्तु हमें इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि हम अतिरिक्त मुद्दे में फंसकर कहीं पौलुस की मुख्य बात के प्रति बेपरवाह न हो जाएं। उसने कहा, ''भला तो यह है, कि तू न ... कुछ ऐसा करे, जिससे तेरा भाई ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा, न हो कि मैं अपने भाई के लिए ठोकर का कारण बनूं।'' कुछ लोगों को यह वाक्य अति लगता है। वे आपत्ति करते हैं कि उन्हें यह या वह करने का ''अधिकार है।'' एक अर्थ में पौलुस ने सिखाया, ''अपने भाई की सहायता करने के लिए अपने अधिकार को त्यागना आपका अधिकार है।''

कोई कैसे जान सकता है?

जिमी जिविडन

बाइबल के नाम पर परस्पर विरोधी शिक्षाएं दी जाती हैं। दोनों ओर के उपदेशक यह दावा करते हुए कि जो कुछ वे बता रहे हैं वह परमेश्वर की इच्छा है, लोगों के मनों को उलझन में डाल देते हैं। कैसे पता चल सकता है कि कौन परमेश्वर की ओर से बात करता है?

एक जन दावा करता है कि उसकी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है क्योंकि जो कुछ वह कहता है उसका सबूत मनुष्यों की परम्परा है। कलीसियाओं, कौंसिलों तथा मनुष्य के धर्मसारों से इसकी पुष्टि हो चुकी है। समस्या यह है कि मनुष्य की परम्पराएं परिवर्तनीय और विरोधाभासी हैं। एक कलीसिया का विश्वास दूसरी कलीसिया के अकीदे से बिल्कुल उल्ट है। धार्मिक अधिकार के लिए ऐसी मानवीय परम्पराओं पर निर्भर नहीं

किया जा सकता। परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है (1 कुरिन्थियों 14:33)।

किसी और का मानना है कि उसकी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है क्योंकि उसे नया प्रकाशन प्राप्त हुआ है। समस्या यह है कि लेटर डे वाले कथित प्रकाशन परिवर्तनीय और विरोधाभासी हैं। लेटर डे वालें की शिक्षाएं यदि विरोधाभासी हैं तो स्पष्ट है कि दोनों में से कोई तो गलत है। जब वे बदल जाती हैं तो स्पष्ट है कि वे परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकतीं। परमेश्वर तो बदलता नहीं है और न ही वह अपना विरोधी है। नये प्रकाशन को धार्मिक अधिकार के लिए कसौटी नहीं माना जा सकता।

कोई और दावा करता है कि उसकी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है क्योंकि इसे बहुत से लोग मानते हैं। उसकी नज़र में लोगों की आवाज़ परमेश्वर की आवाज़ है। वह यह मानता है कि शिक्षा की सच्चाई को उसके ग्रहण करने वाले के द्वारा तय किया जाता है कि यह सही है या गलत। यदि वह किसी बात को अस्तित्व में मानकर यह मान ले कि यह सच है तो यह ''उसके लिए'' सच है। दो अलग-अलग शिक्षाएं तभी सही हो सकती हैं यदि यह मान लिया जाए कि दोनों सही हैं। उसकी नज़र में कोई भी सच्चाई निष्पक्ष, सम्पूर्ण या सार्वभौमिक नहीं है। लोग सच्चाई की इस सापेक्षिक, व्यक्तिनिष्ठ कसौटी को अपने विश्वास को तय करने के लिए इस्तेमाल में लाते हैं। ऐसा विश्वास विरोधाभासी और परिवर्तनशील है। यह परमेश्वर की प्रकृति को ही तय कर देता है जो कि ''कल और आज और युगानुयुग एकसा है'' (इब्रानियों 13:8)।

धार्मिक सच्चाई की कसौटी केवल और केवल बाइबल हो। यह परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई है, सम्पूर्ण है और इसमें कोई विरोधाभास नहीं। ''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

दो स्त्रियां और दो व्यवस्थाएं

जैरी बेट्स

दोनों वाचाओं को पूरी तरह से समझाने के प्रयास में पौलुस ने गलातियों 4:21-5:1 में हाज़िरा और सारा नामक दो स्त्रियों के रूपक का इस्तेमाल किया। इस पाठ में मैं इसी कहानी को देखना चाहता हूं। ताकि हम सब को दोनों वाचाओं के बीच सम्बन्ध की बेहतर समझ आ सके। पहले हमें संदर्भ को देखना आवश्यक है। गलातियों की पुस्तक उन यहूदियों को लिखी गई थी जो अपनी पुरानी पहचान में वापस जाने यानी व्यवस्था के अधीन रहने की, ओर लौटने की प्रतीक्षा में थे। यहूदी लोग अब्राहम की शारीरिक संतान होने का घमण्ड करते थे, और इस कारण वे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और आशिषों को अपने लिए ही मानते थे। परन्तु पौलुस ने उन्हें याद दिलाया कि अब्राहम के दो बेटे थे। एक बेटा वायदे की संतान था जबकि दूसरा बेटा दासी की संतान था। एक को तो आशिषें मिलीं पर दूसरे को नहीं। इस कारण केवल अब्राहम की शारीरिक संतान होना परमेश्वर

की आशिषों की गारंटी नहीं थी। इस उदाहरण में हाज़िरा सीनै पहाड़ पर दी गई व्यवस्था को दर्शाती है जिसमें इश्माएल यरूशलेम के साथ यहूदी जाति को दर्शाता है जिसका आराधना का केन्द्र सांसारिक यरूशलेम है। सारा कलवरी पर बांधी गई एक नई वाचा को दर्शाती है जबकि इसहाक हर उस व्यक्ति को दर्शाता है जो मसीह में विश्वास के द्वारा उस नई वाचा का सदस्य बनता है।

जन्म

इश्माएल का जन्म बिल्कुल शारीरिक परिस्थितियों में हुआ था। उसका जन्म तब हुआ जब अब्राहम ने परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसा किए बिना उसकी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में परमेश्वर की सहायता करने की कोशिश की। उसके जन्म के साथ कोई प्रतिज्ञा नहीं थी। इस्त्राएल जाति शरीर की संतान और उसकी आशिषें अधिकतर शारीरिक ही हैं। एक का जन्म पुरानी वाचा में शारीरिक रूप में हुआ था। सो इसका सदस्य होने के लिए शरीर और लहू यानी उस वंश का होना आवश्यक था।

दूसरी ओर इसहाक का जन्म अलौकिक नियमों से हुआ। उसकी माता सारा अब्राहम की पत्नी थी। उसका जन्म प्राकृतिक था परन्तु उसका जन्म सम्भव बनाने के लिए परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया। उसका जन्म परमेश्वर की प्रतिज्ञा के कारण था और वह विश्वास का परिणाम था। इसहाक की संतान परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का आत्मिक प्राप्तकर्त्ता हैं जोकि अधिकतर आत्मिक हैं। रोमियों की पुस्तक में पौलुस ने बार बार शारीरिक इस्त्राएल और आत्मिक इस्त्राएल में अंतर किया। इसहाक उस आत्मिक इस्त्राएल का प्रतीक है जिसका जन्म नये जन्म के साथ आत्मिक जन्म होता है, ''वे न तो लहू से न शरीर की इच्छा से न लहू की इच्छा से परन्तु परमेश्वर की इच्छा से हैं'' (यूहन्ना 1:13)। निकुदेमुस जब यीशु के पास आया तो उसने नये जन्म की बात की यानी एक व्यक्ति के लिए नये सिरे से जन्म लेना यानी जल और आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है (यहून्ना 3:3, 5)। इस कारण यह पुरानी वाचा के शारीरिक जन्म के उलट आत्मिक जन्म की बात है।

शर्तें जिसके तहत वह रहते थे

हाज़िरा और इश्माएल गुलाम थे। वे सीनै पहाड़ पर दी गई व्यवस्था को, या यूं कहें कि उस आज्ञाओं को दर्शाते थे। इस वाचा को जुआ बताया गया है जो उनके पूर्वज नहीं उठा पाए थे। जब तक हम पुरानी वाचा के तहत रहते हैं तब तक हम पाप और इस संसार के गुलाम हैं। सारा और इसहाक आज़ाद हुए। यरूशलेम में दी गई मसीह की वाचा हमें आज़ाद करती है। ''मसीह ने स्वतन्त्रता के लिए हमें स्वतन्त्र किया है; अत: इसी में स्थिर रहो'' (गलातियों 5:1)। मसीह में हम मूसा की व्यवस्था से मुक्त हो जाते हैं, पर हर व्यवस्था से नहीं। अब हम व्यवस्था के कारण नहीं बल्कि अनुग्रह के कारण परमेश्वर की सेवा करने के लिए स्वतन्त्र हैं। अब हमारा उद्धार अनुग्रह और विश्वास से हो सकता है और हमें पापों की क्षमा मिल सकती है, जो कि पुरानी व्यवस्था में सम्भव नहीं था। स्वतन्त्रता का अर्थ पाप से झूठ नहीं बल्कि पाप से आज़ादी है।

दो बेटों की आत्मा

इश्माएल में गुलाम की यानी सताने वाली आत्मा थी। एक हाथ से दूध छुड़ाते के समय इश्माएल ने इसहाक का ठट्ठा उड़ाया और उसे सताया। इसके बाद में आत्मिक इस्त्राएल यानी कलीसिया के लिए अर्थ था। यहूदी जाति ने ही मुख्यतया मसीह और उसकी कलीसिया को सताया था।

इसहाक दुख उठाने वाला, दीन, और आत्मिक व्यक्ति था। मसीह की कलीसिया को जल्द ही यहूदी अगुओं द्वारा सताया जाने लगा। ''पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:12)। पौलुस गलातियों को सिखाना चाहता था कि यह यहूदी मत में आनेवाले सचमुच में उनके शत्रु थे।

अंतिम परिणाम

इश्माएल वारिस नहीं क्योंकि उसे केवल एक गुलाम का भाग मिला था। जब इश्माएल ने इसहाक का ठट्ठा उड़ाया तो इसे सारा ने देखा था। तब उसने अब्राहम को हाज़रा और उसके बेटे को निकाल देने के लिए मना लिया। इश्माएल को क्यों निकाला गया? क्योंकि वह इसहाक के साथ वारिस नहीं होना था। इसका अर्थ यह था कि पुरानी वाचा को हटा दिया गया। इस्त्राएलियों को मिलनी वाली आशिषें सांसारिक कनान देश तक सीमित थी। उनका उद्धार अनंतकाल तक हो सकता था परन्तु यह पुराने नियम की व्यवस्था में नहीं था। उद्धार व्यवस्था को मानने से नहीं मिलना था।

प्रतिज्ञा का पुत्र होने के नाते इसहाक भी अब्राहम की जागीर का वारिस था। यह कलीसिया को दर्शाता है जो कि मसीह के साथ संगी वारिस है। ''और यदि संतान हैं तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम उसके साथ दुख उठाए तो उसके साथ महिमा भी पाए'' (रोमियों 8:17)। मसीही लोगों के रूप में हमें गुलामी से छुड़ाया गया है।

''इसलिए हे भाइयो, हम दासी के नहीं, परन्तु स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं। मसीह ने स्वतंत्रता के लिए हमें स्वतंत्र किया है; सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो'' (गलातियों 4:31-5:1)। जैसा कि हमने देखा, नई वाचा की आशिषों का भाग पापों की क्षमा और अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा है। व्यवस्था के अधीन जाने का अर्थ उस गुलामी में वापस जाना है।

सारांश

वाचाएं दो हैं, एक वह जो मूसा के द्वारा सीनै पहाड़ पर दी गई पुरानी वाचा और दूसरी क्रूस पर मसीह के द्वारा दी और बांधी गई नई वाचा। हमने देखा कि पुरानी वाचा को छोड़ नई वाचा ने पुरानी की जगह ले ली है। पुरानी वाचा में जाने का अर्थ अनुग्रह से गिरना है (गलातियों 5:4)। हम दोनों को नहीं मान सकते। मसीह उसकी व्यवस्था में जो कि ''स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था है'' कुछ भी जोड़ना गलत है (याकूब 1:25)। मसीह को और उस वाचा से जुडी आशिषों को काम करना है।

कोई कलीसिया महान कैसे बनती है?

डेनियल एस. हैम

यीशु ने बनाई। ''... मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मत्ती 16:18)।'' ... मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया'' (इफिसियों 5:25)। ... और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन [कलीसिया] में मिला देता था'' (प्रेरितों 2:47)। प्रभु ने कलीसिया को एक महान कलीसिया बनाया! रोमियों 16:16, ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं [स्थानीय मण्डलियों] की ओर से नमस्कार।'' दूसरी कलीसियाएं (संगठन) महान नहीं हैं! यीशु ने वादा किया, ''... हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा'' (मत्ती 15:13)।

बाइबल बताती है! जब कलीसिया केवल नये नियम के नमूने के अनुसार होती है तो यह महान होती है! पतरस 4:11'' ... यदि कोइ बोले तो ऐसा बोले मानो जैसे परमेश्वर का वचन है।'' प्रकाशितवाक्य 22:18, 19 में बाइबल में जोड़ने और इसमें से घटाने की मनाही करता है। गलातियों 1:8, 9 उन सब के लिए जो झूठी शिक्षाएं देते हैं दण्ड का वादा करता है, और ऐसे लोगों को विश्वासी भाइयों की संगति में स्वीकार नहीं किया जा सकता (2 यूहन्ना 9-11)।

कलीसिया का नाम महान है: *''मसीह की कलीसियाएं''* (रोमियों 16:16): *''परमेश्वर की कलीसिया''* (प्रेरितों 20:28)।

कलीसिया का संगठन महान है: प्राचीन (ऐल्डर्स), डीकन (डीकन्स), सुसमाचार सुनाने वाले (इवैंजलिस्ट), उपदेशक (सिखाने वाले), विश्वासी लोग (फिलिप्पियों 1:1;1 तीमुथियुस 3:1-13; इफिसियों 4:1-16)।

कलीसिया ने उद्धार की बड़ी योजना को लागू किया है: सुनो (रोमियों 10:17); विश्वास करो (यूहन्ना 3:16); मन फिराओ (लूका 13:3); अंगीकार करो (मत्ती 10:32) और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लो (प्रेरितों 2:38)।

कलीसिया की आराधना सेवा महान है: ''आत्मा और सच्चाई'' (यूहन्ना 4:24); सप्ताह के पहले दिन (प्रेरितों 20:7), प्रभु भोज, (इफिसियों 5:19); गीत गाने (1 कुरिन्थियों 26:3); प्रार्थना (प्रेरितों 2:42); सिखाने (1 तीमुथियुस 4:2); और सभी सदस्यों के भाग लेने की ईमानदारी के साथ (इब्रानियों 10:25)।

कलीसिया अपनी वफादारी के कारण महान है: (1 कुरिन्थियों 15:58; प्रकाशितवाक्य 2:1)। विश्वासी भाई एक दूसरे की संगति से आनन्दित होते हैं (1 यूहन्ना 1:7), और अविश्वासी भाइयों को समझाया जाना (मत्ती 18:15-17; रोमियों 16:17), और आवश्यक होने पर संगति से निकाला जाना आवश्यक है (2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 15)। इससे मसीह की कलीसिया महान बनी रहती है (1 कुरिन्थियों 5:5, 7; 1 तीमुथियुस

1:20; इफिसियों 5:25-27; 1 कुरिन्थियों 15:24; मत्ती 13:41, 42)।

आप बनाते हो! कलीसिया (चर्च) लकड़ी, ईंटों या गारे से बनी इमारत नहीं हैं। यह मसीह की देह है (इफिसियों 1:22, 23), **जो याजको से बनती है** (1 पतरस 2:4, 9)। **मसीह की कलीसिया में प्रवेश करने वाले लोग** (यूहन्ना 3:3-5; प्रेरितों 2:37; 1 कुरिन्थियों 12:13) **कलीसिया को महान बनाते हैं। इसके वफादार बने रहनेवाले लोग गलती करने पर मन फिराकर, अंगीकार करके, और प्रार्थना करके** (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9) **कलीसिया को महान बनाए रखते हैं।**

कलीसिया उतनी ही महान बनेगी जितना आप इसे बनाते हैं! कलीसिया कितनी महान है?

''हे प्रभु, तुझे मैं ही मिला?''

बिली जो गुडन

बीमार हो जाने, आर्थिक तंगी होने या कोई और समस्या होने पर आपने या किसी और ने कितनी बार पूछा है कि ''हे प्रभु, मैं ही क्यों?'' ''मेरे साथ यह क्यों हुआ?'' और ''मैंने ऐसा क्या किया कि मेरे साथ यह हुआ?'' ऐसे प्रश्न हैं जो लोगों द्वारा आम तौर पर परेशानी में होने पर पूछे जाते हैं।

तंदरूस्ती, कमाई करने के योग्य होने, घर को सम्भालने और अपने बच्चों की देखभाल के लिए योग्य होने के साथ-साथ अपने घर को प्रेम और सुरक्षा से भरा बनाने के योग्य होने पर हम में से कितने लोग यही प्रश्न पूछते हैं? प्रेम करने वाले और देखभाल करने वाले माता पिता की आशीष होने के सम्बन्ध में कितने जवान यह प्रश्न पूछते हैं?'' हे प्रभु, तुझे मैं ही मिला? ''मैंने ऐसा क्या किया है कि मुझे जीवन में ऐसी आशिषें मिली हैं?''

मई 1994 में मुझे ALS होने का पता चला जिसे स्वन Gehrig's Disease (दिमाग का एक रोग) जो दिमाग और रीढ़ की कोशिकाओं को प्रभावित करता है। जब मैं 55 वर्ष का हुआ तो मेरी पत्नी को और मुझे बताया गया कि मैं केवल दो से पांच वर्ष जीवित रह सकता हूं। बेशक यह एक बड़ा सदमा था। थोड़ी देर के बाद मेरी पत्नी ने मुझ से पूछा, ''यह आप ही के साथ क्यों हुआ?'' पहली बार रोग का पता चलने पर यही प्रश्न मैंने अपने आप से पूछा था। मेरा तुरन्त उत्तर था, ''क्योंकि मैं पैदा हुआ।'' असल में इस संसार में हमारे जन्म लेने के साथ ही हमारी मृत्यु का आरम्भ हो जाता है। हमारा हर दिन हमें उस ठहराए हुए समय के एक और दिन निकट ले आता है जिसका सामना सब को करना है (इब्रानियों 9:27)। बेशक जब तक प्रभु पहले नहीं आ जाता। ऐसा लगता है कि हम कई बार भूल जाते हैं कि जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी थी तो पाप संसार में आ गया और अपने साथ बीमारी, दुख, और मृत्यु को लेकर आया था। हम सभी को इन सब का सामना करना आवश्यक है, परन्तु धन्यवाद हो परमेश्वर का कि हम उन पर जय पा सकते हैं (1 कुरिन्थियों 15:57, 58)।

मित्रो, मेरी बात को ध्यान से सुनो, हम एक व्यस्त संसार में रहते हैं, यानी उस संसार में जो हमारा अधिकतर समय मांगता है। दुख की बात है कि हम में से अधिकतर लोग संसार की बातों में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि हम आम तौर पर परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और उस पर ध्यान लगाने के लिए समय निकालना भूल जाते हैं, और आम तौर पर प्रार्थना में परमेश्वर के साथ बात नहीं कर पाते। बहुत सी बातों को हम यूं ही ले लेते हैं, और परमेश्वर का धन्यवाद वैसे नहीं कर पाते जैसे हमें करना चाहिए।

''हे प्रभु, तुझे मैं ही मिला?'' जब भी मैं यह प्रश्न पूछता हूं तो मेरे ध्यान में एक और आशीष आती है जिसके लिए मुझे धन्यवादी होना चाहिए। उदाहरण के लिए अब मेरी उम्र 57 वर्ष की हो गई है और मैं हैरान हूं कि परमेश्वर ने मुझे लगभग पूरी तरह से तंदरूस्ती के 55 वर्षों की आशीष दी है। मैं भाग सकता था और खेल सकता था, खेलों में भाग ले सकता था, शिकार करने के लिए जा सकता था, और एक ही कम्पनी के लिए छत्तीस वर्ष तक काम कर पाया। उस दौरान मैंने दूसरों को देखा जो मेरे जितने सौभाग्यशाली नहीं थे। वे चल नहीं सकते थे, भाग नहीं सकते थे, या उन कामों को नहीं कर सकते थे जिन्हें हम आसानी से कर देते हैं। बेशक मेरे पास शिकायत करने का कोई कारण नहीं है।

फिर मेरी पत्नी की बात आती है। पत्नी और पति के रूप में हाल ही में हमने इकट्ठे रहते छत्तीस वर्ष मनाए। बेशक पचासवीं वर्षगांठ और इससे भी आगे साठवीं वर्षगांठ भी मनाना चाहूंगा, परन्तु फिर मुझ से यह कहलवाया जाता है, ''हे प्रभु, तुझे मैं ही मिला?'' मुझे इतनी आशीष क्यों मिली है? मैं इतना सौभाग्यशली क्यों रहा हूं कि मुझे एक ऐसी पत्नी मिली है जो मेरे अच्छे बुरे हर समय, तंदरूस्ती, और बीमारी में भी मेरा साथ देती रही? मुझे इतनी आशीष क्यों मिली कि मुझे एक पत्नी मिली है जो मुझ में विश्वास रखती है, जो परमेश्वर में और उसके वचन में विश्वास रखती है, जिसने मेरी तकलीफ पता चलने पर मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा, ''हम मिलकर इससे लड़ेंगे?''

फिर हमारी बेटी है। मेरा मानना है कि परमेश्वर का भय मानने वाला हर पिता और मां चाहती है कि वे अपने बच्चों को बड़े होते और अपना घर परिवार सम्भालते देखें। फिर से मैं पूछता हूं, ''हे प्रभु, तुझे मैं ही मिला?'' तूने मुझे एक बेटी की आशीष क्यों दी, कि उसे बड़ा होते देखते हुए वह मेरे जीवन में इतनी रौनक और इतनी खुशियां लाई, जिसे मैं अभी भी अपने दफ्तर में कोई चीज लेने के लिए कुर्सी पर चढ़ने की कल्पना कर सकता हूं। अब जब मैं उसे एक अच्छे मसीही पति के साथ अपने घर में देखता हूं जो यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनाता है तो मेरी आशीष बढ़ती है।

''हे प्रभु, तुझे मैं ही मिला?'' मुझे दो सुन्दर सुन्दर नातियों की आशीष क्यों मिली है जिन्हें लगता है कि उनके ''पापा'' ने चांद को आकाश में टांग दिया है? उनके उस निष्कपट प्रेम से मेरा मन उस आनन्द से भर जाता है जो स्वर्ग में मिलने वाला है। अब जबकि मेरी टांगों में इतनी शक्ति नहीं है, मेरे नातियों ने मेरे लिए व्हीलचेयर का प्रबन्ध कर दिया है। फिर से मैं तकनीक की आशीष के लिए परमेश्वर का धन्यवादी हूं जिससे मुझे मोटर चालित व्हीलचेयर मिल गई, जो मुझे घर से ले जाकर अपने नातियों के साथ खेलने और आराधना में जाने के योग्य बनाती है।

मुझे और मेरी पत्नी को इस बीमारी से लड़ते हुए प्रोत्साहित करने और प्रार्थना करने के लिए सैकड़ों मसीही लोगों की आशीष क्यों मिली है? मैं और बातें गिनवा सकता हूं, परन्तु उम्मीद है कि मैंने इतना कुछ कह दिया है कि पहली बार जब आपको किसी परेशानी का सामना करना पड़े और आपके सामने यह सवाल हो कि ''हे प्रभु, तुझे मैं ही मिला?'' तो आप रूक कर, अपने पूरे जीवन पर ध्यान देते हुए विचार करेंगे कि वास्तविक प्रश्न यह है कि ''हे प्रभु, तुझे मैं ही मिला? तूने मुझे इतनी आशिषें क्यों दी हैं?''

क्या किसी को परवाह है?

लियोन बार्नस

आत्मदया के अपने एक क्षम में दाऊद पुकार उठा था, ''कोई मुझे नहीं देखता'' (भजन 142:4)। क्या आपको भी कभी ऐसा लगा है? कुछ महीने पहले मेरे दफतर में एक महिला आई जो बहुत सी बातों से परेशान थी। मैंने उससे पूछा कि क्या उसका कोई जानकार है, यदि हां, तो उससे जाकर बात करे। उसने कहा ''मैं जीऊं या मरूं किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता।'' ऐसी स्थिति में होना सचमुच में दु:ख की बात है। सही हो या गलत, इससे इसका कोई लेना देना नहीं हैं। जब हमें लगता है कि कोई परवाह करनेवाला नहीं है तो इससे उतनी ही पीड़ा होती है जितनी सचमुच में किसी के न होने पर होती है।

यीशु ने पृथ्वी पर की अपनी सेवकाई के दौरान, परेशान लोगों के लिए अपनी परवाह और तरस को दिखाया। मत्ती 9:36-38 में बाइबल बताती है कि *''जब उसने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। तब उसने अपने चेलों से कहा, 'पके खेत तो बहुत हैं पर मज़दूर थोड़े हैं। इसलिये खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मज़दूर भेज दे।''* यीशु तरस करता था। वह चाहता था कि उसके पीछे आने वाले लोग तरस करें और वह चाहता था कि वे परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह तरस करनेवाले और अच्छे स्वभाव वाले मज़दूरों को भेजे।

परमेश्वर परवाह करता है। हमें चुनौती दी गई है कि *''अपनी सारी चिंता उसी पर डाल दो क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है''* (1 पतरस 5:7)। इसका अर्थ यह हुआ कि उसके जैसे बनने के लिए, उस स्वभाव को लाने के लिए जैसा वह चाहता है कि हमारा हो, हमें भी परवाह करनेवाला होना आवश्यक है। तरस यानि दया दिल से दिखाया जाना आवश्यक है।

संसार में बेदर्द बनने के लिए अपराध, क्रूरता और लालच से परेशान संसार में होना, और उस संसार की पीड़ाओं से कठोर मन वाले बंद दरवाजों की पीछे छिपना आसान है। परन्तु यीशु के पीछे चलने के लिए हमें परवाह करने वाले होना आवश्यक है। जब हम परवाह करते हैं तो उस तरस के समर्थन के लिए काम होने लगेंगे। याद रखो कि दिल के टूटने से इसे बचाए रखने के लिए यदि हम इसे बंद कर देते हैं तो हम प्रेम की भावना को इससे दूर कर देते हैं।